

पाठ-37

पुत्र

यूहन्ना 5:19-29

परमेश्वर कब पिता बने? इसका उत्तर यह है कि वे सदैव पिता रहे हैं। वे शाश्वत पिता हैं, और उनका स्वभाव कभी नहीं बदलता। मसीह कब पुत्र बने? इसका उत्तर यह है कि वे सदैव पुत्र रहे हैं। वे शाश्वत पुत्र हैं, और उनका स्वभाव कभी नहीं बदलता। पिता कभी पुत्र के बिना नहीं था, और पुत्र कभी पिता के बिना नहीं था।

पादरी कहते हैं कि वे 1986 में पिता बने जब उनके पुत्र एंड्रू का जन्म हुआ। उनके पुत्र के जन्म से पहले, उनको पिता के रूप में वर्णित नहीं किया जा सकता था। पुत्र या पुत्री का जन्म ही एक पुरुष को पिता या एक महिला को माता बनाता है। परन्तु परमेश्वर को पुत्र तब नहीं प्राप्त हुआ जब यीशु का जन्म इस दुनिया में हुआ। परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो पहले से ही "पिता की गोद में है" (यूहन्ना 1:18)।

बाइबल यह स्पष्ट करती है कि पुत्र, पिता के समान है (5:18)। शरीर धारण करने से पहले, परमेश्वर पुत्र ने पिता की महिमा (17:5), पिता का जीवन (5:26), पिता की गतिविधि (1:3), और पिता का प्रेम (17:24) साझा किया। वे प्राकृतिक स्वरूप से ही परमेश्वर हैं, परन्तु उन्होंने इस समानता को वश में रखने योग्य नहीं समझा (फिलिप्पियों 2:6)। उन्होंने स्वयं को पिता के अधीन कर दिया और एक सेवक का रूप धारण कर लिया।

एक अवसर पर, यीशु ने कहा, "पिता मुझ से बड़ा है" (यूहन्ना 14:28)। पादरी कहते हैं यह उनके कहने जैसा होगा, "अमेरिका का राष्ट्रपति मुझसे बड़ा है।" वे राष्ट्रपति के साथ समान मानवता साझा करते हैं, परन्तु स्पष्ट रूप से उनका पद उनसे बड़ा है।

इसलिए, जब यीशु ने कहा, "पिता मुझसे बड़ा है," तो उनका मतलब यह नहीं था कि पिता अधिक दिव्य है, बल्कि यह था कि पिता का स्थान अधिक ऊंचा है। पिता स्वर्ग में थे और यीशु क्रूस पर जा रहे थे। इसीलिए यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित

होते कि मैं पिता के पास जाता हूँ..." (14:28)। पिता के पास जाने का मतलब था उनके ऊंचे पद को साझा करने के लिए वापस लौटना।

जैसा पिता वैसा पुत्र

बाइबल पुत्र शब्द का प्रयोग दो प्रकार से करती है। इसका अर्थ आश्रित रिश्तेदार या प्रतिबिंबित प्रकृति हो सकता है।¹

प्राचीन दुनिया में, एक पुत्र अपने पिता के नक्शेकदम पर चलता था। यदि आपके पिता बढ़ई होते तो आप भी बढ़ई होते। और यदि आपके पिता एक अच्छे बढ़ई होते, तो उनके काम की गुणवत्ता आपके काम में झलकती। जैसा कि पुरानी कहावत है, "जैसा पिता वैसा पुत्र।"

नए नियम में, हम एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं जिसे प्रेरितों ने "बरनबास" उपनाम दिया था। बरनबास का अर्थ है "प्रोत्साहन का पुत्र" (प्रेरितों 4:36)। यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि प्रेरितों ने उसे यह नाम क्यों दिया। उन्होंने देखा कि बरनबास एक बड़ा प्रोत्साहन कर्ता था। वह प्रोत्साहन का साकार रूप था, मानव देह में प्रोत्साहन था।

यीशु ने पहाड़ी उपदेश में पुत्र शब्द का प्रयोग इसी प्रकार किया था। उन्होंने कहा, "धन्य हैं वे, जो मेल करानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।" (मत्ती 5:9)। परमेश्वर महान मेल स्थापित कराने वाले हैं, और जब हम मेल स्थापित करते हैं, तो हम उनके चरित्र को प्रतिबिंबित करते हैं।

इसलिए जब बाइबल यीशु को "परमेश्वर का पुत्र" (यूहन्ना 5:25) के रूप में वर्णित करती है, तो पुत्र शब्द का अर्थ यह नहीं है कि वे पिता के आश्रित रिश्तेदार हैं, बल्कि यह है कि वे वास्तव में पिता के स्वभाव को दर्शाते हैं (इब्रानियों 1:3)। परमेश्वर का पुत्र वह सब कुछ है जो परमेश्वर है, मानव शरीर में।

पिता का कार्य करना

यीशु के लिए परमेश्वर का पुत्र होने का क्या अर्थ है, इसकी पूरी महिमा हमारे लिए यूहन्ना 5 में दिखाई गयी है, जहाँ यीशु कहते हैं, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है; क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है" (यूहन्ना 5:19)।

यीशु की गतिविधि वहीं तक सीमित है जो वे पिता को करते हुए देखते हैं। मसीह कह रहे हैं कि वे कभी भी पिता की सीमा के बाहर कुछ भी नहीं करते हैं। पादरी कहते हैं कि काश मैं कह पाता कि मैं जो कुछ भी करता हूँ वह परमेश्वर के कार्य का प्रतिबिंब है, परन्तु निश्चित रूप से, मैं ऐसा नहीं कह सकता। फिर भी यीशु बिल्कुल यही कह रहे हैं: "तुम्हें मेरे जीवन में एक भी ऐसी चीज़ नहीं मिलेगी जो परमेश्वर के कार्य की सीमा से बाहर हो।"

फिर यीशु दूसरा बयान देते हैं जो और भी अधिक आश्चर्यजनक है: "पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है" (5:19)। दूसरे शब्दों में, यीशु कह रहे हैं, "मैं जो कुछ भी करता हूँ वह प्रतिबिंबित करता है कि पिता क्या करते हैं, और पिता जो कुछ करते हैं वह सब मेरे कार्यों में प्रतिबिंबित होता है।"

हम कुछ ऐसे कार्य कर सकते हैं जो यह दर्शाए कि परमेश्वर क्या करते हैं। जब हम प्रेम करते हैं, क्षमा करते हैं या शांति स्थापित करते हैं, तो हम पिता के स्वभाव को दर्शाते हैं। परन्तु कुछ चीज़ें ऐसी भी होती हैं जो सिर्फ परमेश्वर की होती हैं। केवल परमेश्वर ही जीवन देते हैं। केवल परमेश्वर ही मृतकों को जिलाते हैं। केवल परमेश्वर ही न्याय करने वाले हैं। ये परमेश्वर की बातें हैं, और यीशु हमें बताते हैं कि वे इन्हें करते हैं: "जैसा पिता मृतकों को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है। पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है" (5:21-22)।

पुत्र के पास अपने आप में जीवन है

आपका जीवन आपके पिता और आपकी माता के मिलन के माध्यम से परमेश्वर का एक उपहार है। उनके बिना आपका अस्तित्व नहीं होगा। केवल परमेश्वर के पास ही आप में जीवन है। वह एकमात्र ऐसा प्राणी है जिसका अस्तित्व किसी अन्य पर निर्भर नहीं करता।

परन्तु यीशु कहते हैं, "क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उसने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे" (5:26)। ये शब्द हमें त्रिएकत्व के रहस्य को आश्चर्य से देखने में मदद करते हैं। ध्यान दें कि यीशु ने यह नहीं कहा, "पिता आप में जीवन है और पुत्र आप में जीवन है।" इसका मतलब यह होगा कि दो देवता हैं, दोनों ही अपने आप में जीवन रखते हैं। न ही यीशु ने कहा, "पिता आप में जीवन है और उसने पुत्र को जीवन दिया है।" इसका मतलब यह होगा कि पुत्र आपके और मेरे जैसा ही एक सृजित और आश्रित प्राणी था।

यीशु ने कहा, “जैसे पिता अपने आप में जीवन रखता है, वैसे ही उस ने पुत्र को भी अपने आप में जीवन दिया।” पिता और पुत्र परमेश्वर के एक अनन्त जीवन को साझा करते हैं।²

यह सब एक साथ जोड़ेंगे तो आप हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को देखना शुरू कर देंगे। एक दिन वें मृतकों को जीवित करेंगे और सभी लोगों पर अंतिम निर्णय सुनाएंगे, और वें उन सभी को जीवन देने में सक्षम है जो उसके पास आते हैं।

परमेश्वर को जानना: एक अनुमान या एक प्रकाशन?

नया नियम यीशु की पहचान पर बहुत जोर देता है। वह हमारे साथ में प्रस्तुत परमेश्वर है। और यह सत्य केंद्रीय महत्व का है क्योंकि यदि पुत्र परमेश्वर नहीं होता, तो हम पिता को नहीं जान पाते।

एक अवसर पर, फिलिप्पुस ने यीशु से कहा, “हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे, यही हमारे लिये बहुत है।” यीशु ने उससे कहा, “हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है” (यूहन्ना 14:8-9)।

पादरी कहते हैं कि उनका एक भाई लन्दन में है। वह कुछ मायनों में उनके जैसा है परन्तु कुछ मायनों में बहुत अलग है। वे यह नहीं कह सकते कि, “यदि आपने मुझे देखा है, तो आपने मेरे भाई को भी देखा है,” क्योंकि भले ही वे एक ही माता-पिता से आये हैं, वे बहुत अलग हैं। उन्हें जानने का मतलब उनके भाई को जानना नहीं है।

यदि पुत्र परमेश्वर नहीं होता, तो हम पिता को नहीं जान पाते। सबसे बेहतर हम यह कह पाते कि कोई व्यक्ति जो पिता के साथ था, हमें उनके बारे में बताने आया। यह यीशु को एक देवदूत या भविष्यवक्ता जैसा बना देता, परन्तु यीशु कहते हैं, “जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है” (14:9)।

कूस: क्रूरता का कार्य या प्रेम का उपहार?

बाइबल हमें बताती है कि पिता ने हमारे पापों का दोष और दण्ड अपने पुत्र पर डाल दिया, और यह परमेश्वर के प्रेम का प्रदर्शन था (यशायाह 53:5-6; रोमियों 5:8)।

परन्तु यदि पुत्र परमेश्वर नहीं होता, तो क्रूस क्रूरता का कार्य होता, प्रेम का उपहार नहीं। तब परमेश्वर ने अपनी रचना में से किसी व्यक्ति को चुना होता और उस पर वह सब कुछ डाला होता जिसके सभी लोग हकदार थे। यह कैसा न्याय होता?

यदि पुत्र परमेश्वर नहीं होता, तो हमें रोमियों 5:8 को फिर से लिखना पड़ता: "परमेश्वर अपना अन्याय दिखता है कि जब हम पापी ही थे फिर भी मसीह हमारे लिये मरा।" परन्तु पुत्र परमेश्वर है, और क्रूस पर, वह परमेश्वर ही था जिसने हमारे पापों को उठा लिया और हमारे लिए स्वयं को दे दिया।

दुनिया की रचना करने से पहले ही, उन्होंने पुरुषों और महिलाओं को छुटकारा दिलाने की योजना बनाई ताकि वे हमेशा के लिए उनकी महिमा साझा कर सकें। योजना में बड़ी लागत शामिल थी। इसका मतलब होगा कि परमेश्वर स्वयं को अर्पित कर देंगे, और यह आत्म-दान उनकी अपनी प्रकृति और महिमा का अंतिम प्रदर्शन होगा।

परमेश्वर के आत्म-दान में त्रिएकत्व के सभी व्यक्ति शामिल होंगे। पिता पुत्र को भेजेगा। पुत्र अपनी जान दे देगा। आत्मा स्वयं को प्रत्येक विश्वासी को दे देगा।

पिता और पुत्र की भूमिकाओं पर विचार करें। इनमें से किसकी भूमिका निभाना आसान था: वह जो अपने पुत्र को दे देगा, या वह जो अपना जीवन दे देगा? प्रश्न निरुत्तर है। आपके और मेरे लिए आत्म-समर्पण और बलिदान की अनंत कीमत में पिता और पुत्र एक थे।

उद्धार: निश्चित होना या सर्वोत्तम की आशा करना?

यदि पुत्र परमेश्वर नहीं होता, तो आप कभी भी अपने उद्धार के बारे में आश्वस्त नहीं हो सकते।

पादरी कहते हैं कि उन्होंने हाल ही में अपने क्रेडिट कार्ड कंपनी को फोन किया क्योंकि वे अपना कार्ड अपग्रेड करना चाहते थे। "क्या मैं इसे फ़ोन पर कर सकता हूँ?" उन्होंने पूछा। प्रतिनिधि बहुत मददगार था और उसने उन्हें आश्वासन दिया कि वे ऐसा कर सकते हैं।

कुछ दिनों बाद उन्हें एक पत्र मिला।

प्रिय कॉलिन स्मिथ,

आपके क्रेडिट कार्ड खाते के संबंध में आपकी हालिया पूछताछ के लिए धन्यवाद। दुर्भाग्य से, हम आपके अनुरोध के अनुसार आपका खाता बदलने में असमर्थ हैं। यदि आप अपना खाता बदलना चाहते हैं, तो कृपया ऊपर सूचीबद्ध टेलीफोन नंबर पर हमारी ग्राहक सेवा से संपर्क करें।

स्पष्टतः, प्रतिनिधि को खारिज कर दिया गया था! उसे पूरी ईमानदारी से विश्वास था कि पादरी का खाता फोन पर बदला जा सकता है, परन्तु उसके पास ऐसा करने का अधिकार नहीं था।

यदि मसीह के साथ भी ऐसा ही होता तो क्या होता? यदि यीशु परमेश्वर नहीं होते, तो किसी उच्च अधिकारी द्वारा उन्हें खारिज किये जाने की संभावना हमेशा बनी रहती। और हमें स्वर्ग के द्वार पर इस संभावना का सामना करना पड़ता कि हम प्रवेश करने के योग्य नहीं हैं।

परन्तु पिता ने सारा न्याय पुत्र को सौंपा है (यूहन्ना 5:22), और पुत्र स्वभावतः परमेश्वर है। मसीह ब्रह्मांड के सर्वोच्च न्यायालय की अध्यक्षता करते हैं। उनसे उच्च कोई अधिकारी नहीं है। इसलिए जब पुत्र कहता है कि तुम्हें क्षमा कर दिया गया है, तो तुम्हें वास्तव में क्षमा कर दिया गया है!

यीशु हमारे साथ में प्रस्तुत परमेश्वर हैं, और इस कारण से हम वास्तव में उनके माध्यम से पिता को जान सकते हैं। क्रूस पर उनकी मृत्यु हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम का सर्वोत्तम प्रदर्शन है। परमेश्वर संसार को मसीह में अपने साथ मिला रहे थे (2 कुरिन्थियों 5:19)। प्रभु यीशु मसीह का ईश्वरत्व हमारे उद्धार का आश्वासन है। यीशु ने कहा, “मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।” (यूहन्ना 5:24)।

टिप्पणियाँ:

1. मैं न्यू टेस्टामेंट की “सन लैंग्वेज” पर प्रोफेसर डॉन कार्सन के काम के लिए उनके प्रति अपना ऋण सहर्ष स्वीकार करता हूँ। विशेषकर डी. ए. कार्सन, द डिफिकल्ट डॉक्ट्रिन ऑफ द लव ऑफ गॉड (व्हीटन, आईएल: क्रॉसवे, 2000), 31एफएफ देखें।

2. मैं इस बिंदु के लिए फिर से डॉन कार्सन का आभारी हूँ, विशेष रूप से ईश्वर के प्रेम के कठिन सिद्धांत, 37-39 में।

प्रश्न

परमेश्वर के वचन के साथ आगे जुड़ने के लिए इन प्रश्नों का उपयोग करें। उन पर किसी अन्य व्यक्ति के साथ चर्चा करें या उन्हें व्यक्तिगत प्रतिबिम्ब प्रश्नों के रूप में उपयोग करें।

1. यीशु परमेश्वर का पुत्र कब बने?
2. आपके अपने शब्दों में, इसका क्या मतलब है जब बाइबल कहती है कि यीशु "परमेश्वर का पुत्र" है?
3. आप उस व्यक्ति को क्या प्रतिक्रिया देंगे जो कहता है, "कूस कूरता का कार्य था"?
4. इस कथन का उत्तर दें: "यदि पुत्र परमेश्वर नहीं होता, तो हम पिता को नहीं जान पाते।"
5. 1 (कोई भरोसा नहीं) से 10 (निश्चित) के पैमाने पर, आपको अपने उद्धार पर कितना भरोसा है? आपके आत्मविश्वास या आत्मविश्वास की कमी के पीछे क्या कारण हैं?